

आपके मसीही जीवन के पहले चालीस दिन

दिन एक : “सम्पूर्ण रीती से उद्धार”

यीशु में बपतिस्मा द्वारा परमेश्वर ने आपके लिए जो भी किया है, वह सही में आश्चर्यकारक है।
कुलुस्सियों १:२१-२३

१. आज के पहले, परमेश्वर के साथ आपका रिश्ता कैसे था ? परमेश्वर को अपना शत्रु बनाने के लिए आपने क्या किया था ?
२. पवित्र/निष्कलंक/निर्दोष रहने का मतलब क्या है ?
३. अपने उद्धार में बने रहने की शर्त क्या है ? (व.२३)।

१युहन्ना ३:१-४

१. “परमेश्वर की संतान” होने के नाते आपका स्वभाव कैसे होना चाहिए?
“अपने-आपको पवित्र” बनाए रखने की शुरुवात आप कैसे करेंगे ?

इब्रानियों १:२४-२८/इब्रानियों १०:१९-२३.

१. यीशु की कुरबानी ने आपके लिये क्या किया है ?
२. सच्चे मन के साथ आप परमेश्वर के समीप कैसे जा सकते हैं ?

भजन संहिता १०३:१-५

१. परमेश्वर ने आपके पापों के साथ क्या किया है ? लिखिये कि परमेश्वर ने आप पर
और क्या ‘उपकार’ किये हैं। (व. २)

जीवन में उपयोग : परमेश्वर की स्तुति किजिए और आपके उद्धार के लिए उनका शुक्रिया अदा किजिए। परमेश्वर को एक अहसानभरा पत्र लिखिए।



दिन दो : “परखा जाना और परीक्षा में पड़ना”

मत्ती ३ : १६-४:११

१. यीशु के बपतिस्मा के बाद उनके साथ क्या हुआ ? आपके बपतिस्मा के बाद आपको किस बात की अपेक्षा करनी चाहिये?
२. परमेश्वर के साथ रिश्ते और यीशु के लिए परमेश्वर की योजना के विषय में यीशु की क्या परीक्षा हुई ?
३. बपतिस्मा के बाद शैतान ने आपके मन में शक/असुरक्षितता/भय डालकर आपकी किस प्रकार परीक्षा ली ?
४. परीक्षा का सामना करने के लिए यीशु ने पवित्रशास्त्र का कैसे उपयोग किया? पवित्रशास्त्र शैतान के झूठ को बेपरदा कैसे करता है ?

इफीसियों ६:१०-१८

१. आपके खिलाफ शैतान की युक्ती कितनी शक्तिशाली है ?
२. आपको मजबूत रखने के लिए परमेश्वर ने कौनसे आत्मिक हथियार हमें दिये हैं?
३. शैतान का सामना करने के लिए हमारा एकमात्र हथियार क्या है ? (व. १७)

जीवन में उपयोग : परीक्षा की इच्छा करो और अपने संघर्षों के बारे में खुले दिल के रहो । आप की परीक्षाओं के बारे में किसी और मसीही को बताइए और साथ में प्रार्थना कीजिये ।



दिन तीन : “बढते हुए जड़”

लूका ८:१३

१. जो नए शिष्य ‘जड़’ नहीं पकड़ते हैं, उनका क्या होता है ?

प्रेरितों : २:४१-४७ / प्रेरितों ४:३२-३७

१. ये नए शिष्य किस कारण विश्वास योग्य थे ?
२. क्या आप उन्ही चीजों में लवलीन थे जिसमें वे थे (२:४२) ?
३. कलीसिया में आप रिश्तों को गहरा कैसे बना सकते हैं ?

१थिस्सलुनुकियों १:२-१०

१. 'गहरे संकल्प' का अर्थ क्या है ? गहरा संकल्प आप कैसे बढ़ा सकते हैं ?
२. आपको किसकी नकल करनी चाहिये ? किन क्षेत्रों में ? क्या आप दूसरों के लिये एक 'आदर्श' हैं ? कैसे ?

जीवन में उपयोग : इस हफ्ते उन मसीहियों के साथ वक्त बिताइये जिनकी आप नकल कर सकते हैं । जिनको आप प्रोत्साहन दे सकते हैं । जिनसे आप सीख सकते हैं ।



दिन चार : "प्रार्थना करना सीखना"

लूका : ११:१-३

१. हमें प्रार्थना करना क्यों सीखना चाहिये ? आप किससे सीख रहे हैं ?

२.(व. २-४) आप किस प्रकार से परमेश्वर के नाम की स्तुति कर सकते हैं ? क्या आप परमेश्वर के राज्य के लिये प्रार्थना करते हैं ? (ताकि कलीसिया संख्या में बढ़े) ? क्या आप दैनिक जरूरतों के लिये और अपने क्षमा के लिये और दूसरों को क्षमा करने के बारे में प्रार्थना करते हैं ? क्या आप परीक्षाओं का सामना करने के लिये मदद और सुरक्षा के लिये प्रार्थना करते हैं ?

३. वचन ५-१३ में यीशु हमें कौनसी बात समझाना चाहते हैं ? प्रार्थना इस रूप में की जाती है : स्तुती, क्षमा, धन्यवाद और बिनती करना । अगर आप इन चारों में से हर एक विषय के बारे में १० मिनट प्रार्थना करें तो आप कुल मिलाकर ४० मिनट तक शक्तिशाली प्रार्थना कर सकते हैं । परमेश्वर की सही स्तुति करना भजन संहिता से सीखीये ।

फिलिप्पियों ४:६-७

परमेश्वर हमें किन चीजों के बारे में प्रार्थना करने के लिए कहते हैं ? आज आप किन चिन्ताओं के बारे में प्रार्थना कर सकते हैं ? जब आप प्रार्थना करते हैं तो क्या आपके दिल में शांति उत्पन्न होती है ? विश्वास कीजिये वह आपकी प्रार्थना सुनेंगे ।

जीवन में उपयोग : ऊपर दिया हुआ तरीका (स्तुती, क्षमा, धन्यवाद, बिनती) अपनाकर प्रार्थना कीजिये । आपकी कुछ बिनतियां लिखकर देखिये कि परमेश्वर उनका जवाब कैसे देते हैं ।



दिन पांच : “परमेश्वर का अनुग्रह”

रोमियों ५:६-११

१. जब यीशु आपके लिये मरे तब आप निर्बल कैसे थे ?
२. आपके जीवन में परमेश्वर का महान प्रेम कैसे साबित होता है ?

तीर्त्स ३:३-८, तीतुस २:११-१४

१. हमको हमारा पिछला जीवन याद दिलाना जरूरी क्यों है ?
२. परमेश्वर से क्षमा पाने के लिये आपने क्या किया है ?
३. परमेश्वर के अनुग्रह का जवाब किस प्रकार देना चाहिये ?
४. बताइये कि आप संयम रखकर अच्छे कर्म करने के उत्सुक कैसे बन सकते हैं ?

१कुरिनथियों १५:९-१० / १ तिमोथियुस १:७-१२

पौलुस ने परमेश्वर के उपकार का जवाब कैसे दिया ?

जीवन में उपयोग : तीन चीजें लिखिये (और कीजिये) जो परमेश्वर को यह दिखाएं कि आप उनके दिये हुए उद्धार के प्रती कितने आभारी हैं ?



दिन छ : “इतना अच्छा कि छुपा नहीं सकते”

२राजा ७:३-११

१. बसिसमा के पहले आप इन चार कुष्ठरोगियों की तरह भूखे और बिना आशा के कैसे थे
२. परमेश्वर का राज्य कैसे एक अनंत भोजन के समान है ?
३. व. ९ में शिष्य बनने के बारे में आप क्या सीखते हैं ? क्या आपका स्वभाव वैसा ही है ?

रोमियों १०:१-४ / १४-२१

१. क्या आपको लगता है कि पौलुस खोए हुआओं की परवाह करता है ?
२. परमेश्वर प्रचार करने के लिये किसे भेजते हैं ?
३. क्या सब लोग सुसमाचार का स्वीकार करेंगे ? क्यों ?
४. लोगों का जवाब चाहे कुछ भी क्यों न हो, आपको लगातार सुसमाचार का प्रचार करते रहना आवश्यक क्यों है ?

भजन संहिता ११६: १-१४ परमेश्वर के सारे अच्छाईयों का कर्ज आप कैसे चुका सकते हैं ?

जीवन में उपयोग : यह लक्ष्य तय कीजिये कि आज आप कितने लोगों को प्रचार के द्वारा कलीसिया की सभा में बुलाएंगे । निराश न होने का निर्णय कीजिये ।



दिन सात : “परमेश्वर का परिवार”

मरकुस ३:३१-३३

१. यीशु को अपने शारीरिक और धार्मिक परिवार के बीच में किसी एक को क्यों चुनना पड़ा ?
२. वे कौन हैं जो सबसे ज्यादा आपके करीब हैं ? आपको कौनसे चुनाव करने हैं ? क्या परमेश्वर के लोग सचमुच आपका परिवार हैं ?

१पतरस १:२२

१. ‘निष्कपट प्रेम’ क्या है ? आप दिल की गहराईयों से कैसे किसी से प्रेम करते हैं ?
२. कौन है जिससे आपने पहले इस प्रकार का प्रेम किया ? शिष्यों के लिये आपका प्रेम किस प्रकार बढ़ना चाहिये ?

२कुरिन्थियों ५:१६-१७

१. आज से पहले आपने किस प्रकार लोगों को सांसारिक दृष्टिकोन से देखा ?
२. लोगों को सांसारिक दृष्टिकोन से न देखने के लिये आपको किन क्षेत्रों में परिवर्तन करना जरूरी है ? (साफ साफ हर एक क्षेत्र के बारे में विचार कीजिये) ।

१तिमुथियुस ५:१-१२

आपके मिनिस्ट्री में कौन हैं जो आपके धार्मिक ‘माता, पिता, भाई और बहन बन सकते हैं ?

जीवन में उपयोग : इस हफ्ते में आपके मिनिस्ट्री में से दो ऐसे मसीहियों के साथ वक्त बिताने का निर्णय कीजिये, जिनके साथ आपने पहले कभी वक्त न बिताया हो ।



दिन आठ : “महिमा की आशा”

१ कुरिन्थियों १५:१९

१. यीशु में हमारी आशा इस जीवन के बाद के लिये भी क्यों है ?
२. यदि अनन्त जीवन नहीं होता तो हम मसीही सब मनुष्यों से अधिक अभागे क्यों होते ?

१ कुरिन्थियों १५:४२-५८

१. पौलुस हमें क्या भेद बताते हैं? (व. ५१) ?
२. हम मौत से क्यों डरते हैं ? अब हमें मौत से क्यों नहीं डरना चाहिये ?
३. परमेश्वर के लिये हमें किस प्रकार कार्य करना चाहिये? जब हम अपने आपको सम्पूर्ण रीती से सौंपेंगे तब क्या होगा ?

कुलुस्सियों ३:१-४

१. आप मसीह के साथ कब जिलाए गए ?
२. आज से आपको कौनसी चीजों के बारे में सोचना चाहिये ?
३. कौनसी चीजें हैं जिनके बारे में अधिक सोचना आपको बंद करना चाहिये ?

जीवन में उपयोग : क्षणभर के लिये यह सोचिये कि स्वर्ग कैसा होगा। और स्वर्ग जाने के मौके के लिये प्रतिदिन परमेश्वर का धन्यवाद करना ना भूलें।



दिन नौ : “अनेक प्रकार की परीक्षाएं”

याकूब १:२-८

१. परमेश्वर हमें परीक्षाओं में क्यों पड़ने देता है ?
२. परीक्षाओं में पड़ने के बारे में आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये ?
३. इस वक्त आपके जीवन में कौनसी परीक्षाएं हैं?

याकूब १:१२-१५

१. हम परीक्षा में स्थीर रहकर खरा कैसे निकल सकते हैं ?
२. परीक्षाएं कहाँ से आती हैं ? कौनसी चीजें आपको परीक्षा में डालती हैं ? क्या अपनी परीक्षाओं के बारे में आपने परमेश्वर को और किसी शिष्य को बताया है ?

१पतरस १:३-९

१. परीक्षाओं में हमको आनंदित और मग्न क्यों रहना चाहिये ?
२. आपका विश्वास सच्चा (असली) है या नहीं यह आप कैसे जान सकते हैं?
३. लिखिये कि आगे बढ़कर किन क्षेत्रों में आपकी परीक्षा हो सकती है ? (पैसे के विषय में, रिश्ते, दबाव आदि) । भविष्य में आनेवाली परीक्षाओं का सामना करने के लिये आप आज ही तैयार कैसे हो सकते हैं ?

जीवन में उपयोग : आपके जीवन में जो परीक्षाएं हैं उनके बारे में । परीक्षाओं के बारों में आपका स्वभाव कैसा है इस बारे में किसी भी शिष्य से बात किजिये । खुश रहो ।



दिन दस : “यीशु के जैसे प्रार्थना करना”

मरकुस १:३२-३९

१. प्रार्थना करने के लिये यीशु ने किन चीजों का त्याग किया ? उनके पिछले दिन की सोचो । वह प्रार्थना न करने के लिये कौनसे बहाने बना सकते थे ?
२. प्रार्थना करने की जरूरत आपको कब महसूस होती है ? क्या आप कभी प्रार्थना न करने के बारे में बहाना बनाते हैं ?
३. पिछले १० दिनों में आपके प्रार्थना का समय कैसा रहा ?

इब्रानियों ५:७-१०

१. यीशू का प्रार्थना जीवन कैसे था ?
२. क्रूस पर जाने के अलावा और क्या चीजें थी जिनका पालन करना यीशु के लिये कठीन हो सकता था ?
३. शिष्य होने के नाते कौनसी चीजें आपको कठिन लगती हैं?
४. क्या आप ऊंचे शब्द से पुकार-पुकारकर और आंसू बहा-बहाकर परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह आपको आज्ञा का पालन करने की शक्ति दें ?
५. आपके जीवन के वो कौनसे क्षेत्र हैं जिनके बारे में आपको ज्यादा प्रार्थना करने की आवश्यकता है ? एक विशेष सूचि बनाएं ।

जीवन में उपयोग : आपने जो सूचि बनाई उसके बारे में प्रार्थना कीजिये। विशिष्ट रूप से उन्हीं बातों के लिये प्रार्थना करें। ऊँची आवाज में प्रार्थना करते हुए परमेश्वर से ऐसे बातें करने कि कोशिश कीजिये जैसे कि आप परमेश्वर को देख रहे हों। उनको कहिये कि आपको इन क्षेत्रों के बारे में क्या लगता है, क्या कठिन है, क्यों कठिन है, और आप क्या परिवर्तन कर सकते हैं ?

पिछले दस दिनों के 'जीवन में उपयोग' पर गौर कीजिये। क्या आपने उन सब का पालन किया है?



दिन ग्यारह : 'सच्चाई को थामे रहना'

२तिमुथियुस २:४-१९

१. कुछ लोग वचनों के बारे में झगड़कर अपनी ही वीचारों को फेंलाना क्यों पसंद करते हैं ? क्या आप कभी वचनों के बारे में लड़ते हैं ? क्या आपने इसके बारे में किसी और शिष्य से बात की है ?
२. आप स्वयं को परमेश्वर के ग्रहण योग्य कार्यकर्ता बनाने का प्रशिक्षण कैसे दे सकते हैं ?
३. क्या आप हाल ही में परमेश्वर के वचनों के बारे में या कलीसिया के बारे में किसी ऐसी चर्चा में शामिल थे जो बेकार या हानीकारक था ? आप इस अशुद्ध बकवास से कैसे बच सकते हो ?

१तिमुथियुस १:१८-२०

१. आप इस अच्छी लड़ाई को कैसे लड़ सकते हैं ?
२. एक शिष्य अपने 'विश्वासरूपी जहाज़' को कैसे डूबो देता है ?
३. हुमिनयुस (२तिमुथियुस २:१७-१८) और सिकन्दर (२तिमुथियुस ४:१४-१५) को याद करो। जो विश्वास से हट जाते हैं उनके जीवन का नतीजा क्या निकलता है ? वे दूसरों को किस प्रकार हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं ?

१तिमुथियुस ४:१५-१६ :

१. क्या आप प्रतिदिन (एक शीष्य होने के नाते) अपने जीवन पर और सिद्धान्तों (पवित्र शास्त्र को समझने)का ध्यान रख रहे हो ?
२. क्या किसी ने आपमें कोई परिवर्तन देखा है ?

२तिमुथियुस २:२२-२६

जो आपका विरोध करते हैं उनके प्रति आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये ?

जीवन में उपयोग : पवित्र शास्त्र का सही अर्थ या कलीसिया के बारे में अगर आपका कोई भी प्रश्न हो तो अपने मार्गदर्शक से बात कीजिये ।



दिन बारह : 'अच्छे कर्म करना'

इफिसियों २:१०

१. परमेश्वर ने हमें किस कारण बनाया ?
२. आप जो भी अच्छे कर्म कर सकते हैं उनकी सूची बनाओ ।

१पतरस ४:८-११

१. प्रेम अनेक पापों को किस प्रकार ढांप लेता है ?
२. क्या आप दूसरे शिष्यों का अतिथि-सत्कार करते हैं ?
३. आप इस क्षेत्र में सुधार कैसे कर सकते हैं ?
४. परमेश्वर के अनुसार हमें दूसरों को क्या देना चाहिये ?

गलातियो ६:९-१०

१. परमेश्वर के अनुसार हमें किस की मदत करनी चाहिये ?
२. आपके पवित्रशास्त्र चर्चा गुट में ऐसा कौन है जिनकी अभी कुछ खास जरूरतें हैं जिन्हें आप पूरा कर सकते हैं ?

जीवन में उपयोग : यदि आप ज़रूरतों को देखते और उन्हें पूरा कर सकते हैं, तो इस सप्ताह कीजिये । यदि आप नहीं जानते कि आप मदद कैसे कर सकते हैं तो, पूछीये । याद रखीये : हमें एक दूसरे की जरूरत है । हम एक परिवार हैं ।



दिन तेरह : “सेवा के लिये बचाए गए”

मत्ती २५:३१-४६

१. अंतिम दिन पर किस बात के अनुसार हमारा न्याय होगा ?
२. भिखारियों को सिर्फ़ पैसे देना क्यों काफी नहीं है?
३. वचन ३५-३६ में दिये हुए ६ कामों में से हाल ही में आपने कौनसा काम किया ?
४. जब हम गरीबों की परवाह न करें तो हम किसके प्रति लापरवाह बनते हैं?

व्यवस्था विवरण १५:७-१०

१. ‘हृदय कठोर करना’ और ‘मुट्टी कड़ी’ करने का अर्थ क्या है ?
२. परमेश्वर आपसे किस प्रकार का दान चाहते हैं?
३. आपके आसपास कौन है जो गरीब और ज़रूरतमन्द हैं और आप उनकी मदद कैसे कर सकते हैं ?

मत्ती १०:४७

१. कौनसी छोटी-छोटी चीजें हैं जो आपने दूसरों के लिये की और जिन्हें परमेश्वर कभी नहीं भूलेंगे ?
२. कम पैसे होने के बावजूद भी आप ज़रूरतमन्दों की मदद कैसे कर सकते हैं?

याकूब १:२७

१. परमेश्वर की नजर में सची भक्ति क्या है ?
२. परमेश्वर खास करके किसकी ज्यादा परवाह करते हैं?

जीवन में उपयोग : आज आप किसकी मदद कर सकते हैं ? किसी और शिष्य से मिलकर गरीबों की मदद करने की योजना बनाइये ।



दिन चौदह : 'एक नई सृष्टि'

२ कुरिन्थियों ५:१७

१. आपके जीवन की 'पूरानी बातें' जो बीत गई क्या हैं ?
२. आपकी कौनसी चीजें 'नई' हो गई हैं ?

मरकुस २:२१, २२

१. आपको कितना नया बनना चाहिये ?
२. नई आदतें अपनाने में और अंदर से परिवर्तन करने में क्या फर्क है ? क्या आपका जीवन दाखरस की पूरानी मशकों के समान है या नए मशकों के समान ? क्यों ?

रोमियों १२:२

१. आपके जीवन में सांसारिक विचारों के उदाहरण क्या हैं ?
२. आप अपने सोचने के ढंग को कैसे बदल सकते हैं ?

इफिसियों ४:१७ - ५:२

१. आपके पुराने जीवन के चाल चलन और वीचारों के बारे में परमेश्वर क्या कहते हैं?
२. आपकी सृष्टि किसके अनुसार की गई ? एक दूसरे को क्षमा करते रहना आवश्यक क्यों है ?
३. प्रेम का जीवन जीने का अर्थ क्या है ?

जीवन में उपयोग : आपके मार्गदर्शक या करीबी शिष्य से पूछिये कि वे आपमें कौनसे सांसारिक स्वभाव या आदतें देखते हैं?



दिन पंद्रह : "स्वर्ग की आशा"

प्रकाशितवाक्य २०:११-१५

१. सोचिये कि न्याय का दिन कैसा होगा ? वहाँ कौन-कौन रहेगा ?
२. सब को कैसे महसूस होगा ?

प्रकाशितवाक्य २१:१-८

१. मसीह की दुल्हन कौन है ?

२. स्वर्ग का वर्णन कीजिये ।

३. वचन ८ के अनुसार अपने आप को जांचीये। क्या इनमें से कोई भी पाप आपके जीवन में है ?

प्रकाशितवाक्य २२:१-६

१. स्वर्ग में और कौन से अनन्त आनंद होंगे ?

२. परमेश्वर के अनुसार हमें यह जानना जरूरी क्यों है कि 'ये बातें विश्वास के योग्य और सत्य हैं ?

प्रकाशितवाक्य २२:१४-१५

१. क्या इनमें से कोई भी पाप आपके जीवन में है ?

जीवन में उपयोग : स्वर्ग के परमेश्वर के वचनों के बारे में प्रार्थना कीजिये । यदि कोई पाप है जिसे कबूल करके परिवर्तन करने की आवश्यकता है; तो आज ही कीजिये ।



दिन सोलह : 'दूसरों को बचाने के लिये बचाए गए''

१ पतरस २:८-१०

१. 'राज-पदधारी याजक' बनने का मतलब क्या है?

२. आपको कौनसा संदेश बांटना चाहिये ?

३. क्या आप सचमुच परमेश्वर की महीमा प्रकट कर रहे हैं या लोगों को सिर्फ न्योता दे रहे हैं?

२ कुरिन्थियों ५:१४-२१

१. आप यह कैसे कह सकते हैं कि आप अपने लिये जी रहे हैं या यीशु के लिये ?

२. मसीह के राजदूत बनने का मतलब क्या है?

३. जिस प्रकार आप यीशु का प्रतीनिधित्व कर रहे हैं, क्या यीशु उससे खुश होंगे ?

४. लोगों को 'समझाना' और उनसे 'निवेदन' करने का मतलब क्या है ?

५. खोए हुएों के प्रति आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये?

प्रेरित १७:१६-३४

१. पौलुस दुखी क्यों थे ?
२. आपके शहर के कौनसे दृश्य देखकर आपको दुखी होना चाहिये ?
३. पौलुस ने अपना विश्वास कहाँ बाँटा ?
४. पौलुस ने अपने संदेश के शुरुवात में अथेने के लोगों की धार्मिकता की तारीफ क्यों की ?
५. धार्मिक लोगों से बात करने के बारे में, यह आपको क्या सीखाता है? (चाहे वे किसी भी धर्म के क्यों न हों?)
६. पौलुस के संदेश का लोगों ने क्या जवाब दिया ?

जीवन में उपयोग : इस अभ्यास से आपने प्रचार के बारे में क्या सीखा, कम से कम चार बातें लिखो। अगली बार प्रचार करते समय इन बातों को ध्यान में रखकर प्रचार करें।



दिन सतरह : 'ध्यान वीचलित होना या लवलीन रहना'

लूका १०:३८-४२

१. मार्था का ध्यान दूसरी बातों में कैसे खो गया ?
२. उसे कैसा महसूस हो रहा था?
३. इस हफ्ते में किन बातों में आपने अपना ध्यान खोने दिया ?
४. आप ज़्यादा मार्था के जैसे हैं या मरियम के जैसे ?
५. मरियम ने क्या चुना ?
६. यह अच्छा क्यों है ?

लूका ८:१४

१. 'फंस' जाने का मतलब क्या है ?
२. इसका नतीजा क्या होता है ?
३. कौनसी चिन्ताएँ, पैसा, काम, व्यापार, या शौक हैं जो परमेश्वर में और अधिक बढ़ने से आपको रोक रहे हैं?

लूका १२: ३५-४०

१. आपको यीशु के लिये सतर्क और तैयार क्यों रहना है?
२. जब हमारा ध्यान हमारे मकसद से हटकर दूसरी चीजों पर जाता है तो यीशु को कैसे महसूस होता है ?

जीवन में उपयोग : अगर आपका ध्यान मतलब की चीजों से हट गया है और आप वक्त बरबाद करने लगे हैं तो एक कागज पर लिखिये कि आप प्रतिदिन (सुबह से शाम तक) क्या करेंगे ? किसी और शिष्य की सहाय्यता लेकर लिखें ।



दिन अठारह : “दूसरों से सीखना”

मत्ती १८:१-४

१. हमारा किस प्रकारका हृदय होने पर परमेश्वर हमसे खुश रहेंगे ?
२. बच्चों के किन गुणों की हमें नकल करनी चाहिये?

१थिस्सुलूनीकियों ५:१२-१४

१. परमेश्वर में आपके अगुवे कौन हैं ?
२. क्या आपके अगुवे उम्र और शिक्षण के आधार पर चुने जाते हैं ?
३. उन मसीहीयों के नाम लिखिये जो कड़ी मेहनत करते हैं, एक उदाहरण हैं और जो आपको परामर्श देते हैं ।
४. क्या आप उनका आदर करते हैं?
५. किस प्रकार के शिष्यों को खास मदद की जरूरत है (व. १४)?
६. क्या आपको इनमें से किसी भी समस्या के बारे में परामर्श मिला है ?

भजन संहिता ११९:१९-१००

१. सच्ची समझ हमें किस प्रकार मिलती है?
२. वचन १०० हमारे समाज के विचारों के विरुद्ध कैसे है ?
३. जब कोई भी शिष्य जो उम्र में आप से कम है और आपको शिक्षा/मार्गदर्शन/सुधार देता है तो आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये?

१तिमुथियुस ४:११-१२

१. परमेश्वर जवान अगुवों से क्या इच्छा रखते हैं?

भजन संहिता ३२:८-१०

१. आप घोड़े और खच्चर के समान बनने से कैसे बच सकते हैं?

जीवन में उपयोग : यदि आपने आपसे कम उम्र के शिष्यों से शिक्षा लेने से इंकार किया था तो, आज ही पश्चाताप कीजिये और उनको दूँढकर उनसे प्रश्न पूछिये। अगर आप खुद कम उम्र के शिष्य हैं तो दूसरे मसीहीयों के लिये एक महान आदर्श बनीये।



दिन उन्नीस : 'शक्तिशाली प्रार्थना'

१ इतिहास १७:१५-२२

१. जब दाऊद प्रार्थना कर रहे थे तब उन्हें कैसा महसूस हो रहा था? क्यों?
२. परमेश्वर ने किस प्रकार आपको वह आदर और आशिष दिया जिनके आप अयोग्य थे?
३. परमेश्वर ने इस्त्राएल को कैसे आशिष दिया?
४. उन्होंने आज के युग में अपने लोगों के लिये इनसे भी बढ़कर कार्य कैसे किये ?
५. यह प्रार्थना परमेश्वर के बारे में कौनसा स्वभाव प्रकट करता है ?

उत्पत्ति २४:१०-२७

१. आपको क्या लगता है, परमेश्वर ने यह प्रार्थना इतनी जल्दी क्यों सुन ली?
२. इस सेवक की प्रार्थना बहुत साधारण थी, लेकिन उसका विश्वास बहुत मजबूत था। आप यह कैसे कह सकते हैं ?
३. जब परमेश्वर ने सेवक की प्रार्थना का उत्तर दिया तब सेवक का पहला जवाब क्या था?
४. हर एक उत्तर किये हुए प्रार्थना के बारे में क्या आप परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं ?

याकूब ५:१५-१८

१. कौनसी चीज प्रार्थना को शक्तिशाली और असरदार बनाती है?
२. क्या आप उत्सुकता और सच्चे मन से प्रार्थना करते हैं ?

३. क्या आप बड़े विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं? क्या इस हफ्ते आप धार्मिकता के साथ जीए।

जीवन में उपयोग : आज परमेश्वर से कुछ खास क्षेत्रों के बारे में प्रार्थना कीजिये। विश्वास और एहसान की भावना के साथ प्रार्थना कीजिये।



दिन बीस : 'संसार द्वारा परीक्षा में पड़ना'

भजन संहिता ७३:१-१४

१. जब लेखक ने अपने आस-पास धनवान और खोए हुए लोगों को देखा तो उन्हें कैसा महसूस हुआ ?
२. उसे जीवन अन्यायपूर्ण क्यों लगा?
३. किस प्रकार आपने इस दुनिया के लोगों से ईर्ष्या की या जले ?
४. क्या मसीही बनने के बाद आपके मन में इस विषय में संघर्ष हुआ? क्या आपने इसके बारे में किसी से बात की ?

भजन संहिता ७३:१५-२२

१. अपने जीवन के नतीजे के बारे में उन्होंने क्या सोचा?
२. यह 'अच्छा जीवन' एक सपने की तरह कैसे है जो न्याय के दिन मिट जाएगा ?
३. उनसे ईर्ष्या करते समय लेखक की सोच कैसी थी ?

भजन संहिता ७३:२३-२८

१. परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते के बारे में लेखक क्या समझ पाया?
२. वचन २५-२६ याद कीजिये

|

यूहन्ना २:१५-१७

१. इस दुनिया की किन चीजों से हमें नफरत करना चाहिये?

२. कौन सी संसारिक वस्तुएँ हैं जो आपको अब भी अपनी ओर आकर्षित करती हैं?

जीवन में उपयोग : मार्गदर्शक से बात कीजिये कि आपको दुनिया के बारे में क्या लगता है? कौनसी चीज आपको अपनी ओर आकर्षित करती है? उसके बारे में प्रार्थना कीजिये।



दिन इक्कीस : 'परीक्षाओं में आनंदित रहो'

मत्ती ५:१०-११

१. कौनसी बात के कारण हमको परीक्षाओं में आनंदित होना चाहिये?
२. क्या यीशु के कारण लोगों ने आपका अपमान किया या आपके बारे में बुरा-भला कहा है?
३. आपको कैसे महसूस हुआ?
४. और कौन है जिनको आपके समान सताया गया?

यूहन्ना १५:१८-२३

१. दूसरों से हमें किस प्रकार के बर्ताव की अपेक्षा रखनी चाहिये ?
२. दुनिया हमसे नफरत क्यों करती है?
३. जब हम शिष्य बनते हैं तो लोगों के दिल में दोष क्यों पैदा होता है ?

प्रेरितों ४:१३-२२

१. पतरस और युहन्ना इतने साहसी क्यों थे?
२. क्या किसी ने आपको यीशु की शिक्षा पाने, उनके बारे में बोलने या उनकी आराधना करने से रोका है?
३. आपका जवाब क्या था?

प्रेरितों ५:१७-२९

१. डाह के कारण यीशु को सताया गया (मरकुस १५:१०), जलन के कारण प्रेरितों को गिरफ्तार किया गया।

२. हमको किस कारण सतया जाएगा?

३. कौन हमें सता सकता है?

४. जब प्रेरितों को सुसमाचार का प्रचार रोकने के लिए कहा गया तो उनका जवाब क्या था?

प्रेरितों ५:४०-४२

१. प्रेरित खुश क्यों थे ?

जीवन में उपयोग : वचन ४२ का पालन आज और सदा के लिये कीजिये ।

दिन बावीस : 'देकर जीना'

यूहन्ना १३:१-१७

१. यीशु ने सम्पूर्ण रीती से अपना प्रेम कैसे जताया ?

२. वह अपने शिष्यों को क्या सिखाना चाहते थे ?

३. हम व. १७ का पालन कैसे कर सकते हैं?

४. खास करके किन क्षेत्रों में?

प्रेरितों ९:३६-४२

१. सब लोग दोरकास से क्यों प्रेम करते थे?

२. उनके खास दोस्त कौन थे?

३. दोरकास ने उनके लिये इतना कुछ क्यों किया ?

४. अगर आप आज मरें तो आप किस चीज के लिये याद किये जाओगे ?

५. हम दोरकास के जीवन से क्या सीख सकते हैं?

फिलिप्पियों २:१९-२४

१. तिमुथियुस दूसरों से अलग क्यों थे ?

२. दूसरों की भलाई में उनकी सचमुच में दिलचस्पी थी यह बात कैसे साबित होती है?

३. हम कैसे अधिक से अधिक तिमुथियुस की तरह बन सकते हैं?

जीवन में उपयोग : एक ऐसा तरीका सोचो जिससे आप एक शिष्य को यह बता सकें कि आप सच में उसकी परवाह करते हैं । आज ही करें ।



दिन तेवीस : “पाप कबूल करना”

भजन संहिता ३२:१-७

१. जब हम अपने पापों को छुपाते/कबूल नहीं करते तब हमें कैसा महसूस होता है?
२. क्या आपको बपतिस्मा के बाद कभी ऐसा महसूस हुआ ? क्या ऐसा कोई भी पाप है जिसे बताने से आप डरते हैं ?

नीतिवचन २८:१३

१. क्या हम हमारे पाप परमेश्वर से छुपा सकते हैं ?
२. परमेश्वर के अलावा हमें और किसके पास हमारे पाप कबूल करने चाहिये ?
३. छुपाए हुए पापों का हमारे जीवन पर क्या असर पड़ सकता है ?

लूका ८:१७

१. पाप को छुपाना मूर्खता क्यों है?

भजन संहिता ६६:१८-१९

पाप को छुपाने या मन में संजो कर रखने से और क्या होता है ?

जीवन में उपयोग : कुछ वक्त निकालकर सोचिये: क्या ऐसा कोई भी पाप, बुरा स्वभाव , कर्म या विचार है जो आपको बेचैन कर रहा है क्योंकि आपने किसी को भी इस बारे में नहीं बताया ? उन्हें लिखिये और आज ही इसके बारे में बात कीजिये ।



दिन चौबीस : ‘पारीवारिक दबाव’

मरकुस ३:२०-२१

१. यीशु का परिवार उनसे नाराज क्यों था?
२. क्या आपके परिवार में किसी ने आपको परमेश्वर की सेवा करने से इसलिये रोकना चाहा क्योंकि वे समझते हैं कि आप स्वयं को हानि पहुँचा रहे हैं?
३. क्या होता अगर यीशु उनकी बात सुनते?

यूहन्ना ७:१-९

१. यीशु के अपने भाईयों ने उनके बारे में क्या सोचा?
२. यीशु अपने परिवार की इच्छाओं पर क्यों नहीं चले?

मत्ती १०:३७-३९

१. कुछ उदाहरण या तरीके लिखिये जिनके कारण हम अपने परिवार को यीशु से भी ज्यादा प्रेम कर सकते हैं?
२. अगर कोई आपके जीवन को देखे तो वह क्या कहेंगे, कि आप किससे ज्यादा प्रेम कर रहे हैं?

जीवन में उपयोग : आपके परिवार की अपेक्षाओं के कारण जो पारीवारिक दबाव आप पर पड़ रहा है इस बारे में किसी मजबूत शिष्य से चर्चा कीजिये। क्या आपको कोई परिवर्तन करना है?



दिन पच्चीस : 'खुले दिल का रहना'

यूहन्ना १५:१६

१. यीशु ने अपने शिष्यों को क्या बताया ?
२. क्या आप दूसरे मसीहियों के लिये एक ऐसे मित्र हैं?
३. क्या वे सचमुच आपके जीवन के बारे में सब कुछ जानते हैं?

२कुरिन्थियों ६:११-१३

१. खुलकर बातें करने का अर्थ क्या है?
२. क्या आप अपने दिल को खोलकर दूसरों से बातें करते हैं?
३. वो कौनसी भावनाएँ हैं जो आप लोगों से छुपाते हैं?

नितिवचन २०:५

१. अपनी हर बात को खुलकर बताकर क्या आप दूसरों को आपका मार्गदर्शन करने में मदद करते हैं या फिर आपके दिल की बातें खोद-खोदकर निकालनी पड़ती हैं?

जीवन में उपयोग : आपके जीवन की उन बातों को लिखिये, जैसे भावनाएं, योजनाएं, पाप, जो आपने दूसरों से छुपा रखी थीं और किसी मसीही के साथ इस सप्ताह इन बातों पर चर्चा करो। खुले रहो।

पिछले १० दिनों के अभ्यास पर गौर कीजिये। क्या आप उनका पालन कर रहे हैं? कौनसी बातों के बारे में आप को अब भी खुला होना बाकी है। किसी शिष्य के साथ आज समय बिताइये।



दिन छब्बीस : “शक को दूर करना”

मत्ती ११:१-६

१. यह जानकर भी कि यीशु सच्चे हैं यूहन्ना बपतिस्मादाता के मन में संदेह क्यों हुआ?
२. इस शक का हल निकालने के लिये यूहन्ना ने क्या किया?
३. जब आपके मन में शक पैदा हो तो आपको क्या करना चाहिये?

मत्ती १०:१६-१७

क्या यह बात आपको आश्चर्य चकित कर देती है? पढ़कर देखिये कि यीशु ने अपने शक्की शिष्यों को क्या करने को कहा ?

१ कुरिन्थियों १५:११-१४

१. कुरिन्थ के मसीहीयों के मन में क्या शक था? पहले उन्होंने विश्वास किया लेकिन बादमें वे शक करने लगे।
२. कौन सी शिक्षाएँ हैं जिनपर आपने पहले विश्वास किया और बाद में आपको शक हुआ?

लूका २४:३१-४५

१. शक कहाँ से आते हैं?
२. यीशु ने उनका विश्वास बढ़ाने के लिये क्या किया ?

जीवन में उपयोग : लिखिये कि खुले दिल का रहकर वचनों, प्रार्थना और आज्ञा पालन द्वारा आप शक को कैसे मिटा सकते हैं?



दिन सत्तावीस : “विश्वास योग्य बनने की शिक्षा”

पहिले, विश्वास योग्य रहने का अर्थ क्या है ?

१ कुरिन्थियों १३:४-७

१. इन शास्त्रों में प्रेम शब्द के बजाय आपका नाम लिखिये और वापस पढ़िये और पढ़ते समय आपके कुछ खास रिश्तों के बारे में सोचिये ।
२. आपकी नजर में आपको क्या परिवर्तन करना चाहिये?

इफिसियों ४:२९

१. कैसी बातें दूसरों को हानि पहुंचा सकती है?
२. क्या आप ने किसी के साथ क्रूरता से या निन्दा से बातें की हैं?

१ थिस्सलुनीकियों ५:१२-१५

१. प्रभु में आपके ‘अगुवे’ कौन हैं?
२. क्या आपके अगुवे उनके जीवन के आधार पर चुने जाते हैं?
३. कुछ मसीहीयों के नाम लिखिये जो बहुत परिश्रम करते हैं ? क्या आप दिल से उनका आदर करते हैं?
४. जो मसीही कमजोर और सीखने में धीमे हैं उनके बारे में आपका स्वभाव कैसा है?

जीवन में उपयोग : जिनका आप आदर करते हैं और जो प्रभु में आपके अगुवे हैं उनमें से एक को एक सराहना भरा पत्र लिखिये । एक ऐसे शिष्य, को भी लिखिये जिनको प्रोत्साहन की जरूरत है ।



दिन अठावीस : “वाद-विवाद की बातें”

रोमियों १४:१-८

१. आज मसीहीयों के बीच में कुछ वाद-विवाद की बातें क्या हैं? (पहनावा, कपड़े, संगीत, खाद्य पदार्थ आदि)
२. जो लोग इन बातों को अलग नजर से देखते हैं उनके प्रति आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये?

रोमियों १४:१६-२३

१. सबसे ज्यादा परमेश्वर किन बातों पर ध्यान देते हैं?
२. क्या आप ऐसा कोई काम कर रहे हैं जो दूसरों के लिये टोकर का कारण बन सकता है?
३. वचन २३ का अर्थ क्या है?
४. क्या आप अपने आज के जीने के ढंग से खुश हैं?

१तिमुथियुस २:९-१०, १पतरस ३:३

१. कौनसी चीज एक स्त्री को परमेश्वर की नजर में सुन्दर बनाती है? अपने ही शब्दों में यह लिखिये कि यह शास्त्र पहनावा और धार्मिकता के बारे में हमें क्या सिखाते हैं?

मत्ती ११:१८-१९

१. लोगों ने यीशु और यूहन्ना बपतिस्मादाता की निन्दा क्यों की?
२. वे एक दूसरे से इतने अलग थे फिर भी परमेश्वर उनसे प्रसन्न क्यों थे?

जीवन में उपयोग : मसीहियों के लिये क्या सही और क्या गलत है, इसके बारे में क्या आपके कोई प्रश्न हैं? किसी भी मजबूत शिष्य से पूछिये कि क्या ये बातें विवादपूर्ण हैं और अपने आप एक निर्णय बनाईये ।



दिन उनतीस : "यीशु जल्दी वापस आएंगे"

२पतरस ३:३-१४

१. कुछ लोग यीशु के वापस आने की बात का उपहास/मज़ाक क्यों उड़ाते हैं?
२. "प्रभु का दिन" कैसा होगा?
३. क्या आप ऐसे जी रहे हैं जैसे कि यीशु आज ही वापस आ सकते हैं?

१थिस्सुलुनिकियों ४:१३-१८

१. इस शास्त्र की तुलना २पतरस ३:७-१० से कीजिये। जो प्रभु से मिलने के लिये तैयार नहीं हैं क्या उनके लिये एक दूसरा मौका होगा?
२. यह दिन एक रात के चोर के समान क्यों आएगा?

३. जागते रहने और संयम रखने का अर्थ क्या है?

२तिमुथियुस ४:६-८

१. न्याय के दिन प्रभु का सामना करने के बारे में पौलुस के क्या विचार हैं?

२. यीशु के लिये जीवन बिताना, अच्छी कुश्ती लड़ने, दौड़ पूरी करने और विश्वासी की रखवाली करने/विश्वासी बने रहने के समान क्यों है?

३. अंत तक ऐसा जीवन जीने के लिये आपको कौनसे प्रयत्न करने पड़ेंगे?

जीवन में उपयोग : हर दिन ऐसे जीवन बिताओ जैसे कि वह आपका आखरी दिन हो ।



दिन तीस : "प्रेम में एक साथ बंधे रहना"

भजन संहिता १३३:१-३

१. एकता क्या है और कलीसिया में एकता बनाए रखना इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

इफिसियों ४:१-३

१. अपने शब्दों में **वचन २** को समझाइये । जब हम इसके विपरीत बर्ताव करें तो क्या होता है?

२. एकता रखने के लिये हमको सम्पूर्ण प्रयत्न क्यों करना चाहिये?

फिलिप्पियों २:१-५

१. एक मन, एक चित्त और एक लक्ष्य होने का अर्थ क्या है?

२. आप दूसरों को स्वयं से अच्छा कैसे समझेंगे?

३. आप अपने हित के अलावा और किस के जीवन की परवाह कर रहे हैं? यीशु का स्वभाव कैसा था? क्या आपका भी वैसा ही है?

मत्ती १८:१५-१७ / ५:२३-२४

१. एक दूसरे के बीच झगड़े और विचारों में फर्क मिटाने के लिये यीशु हमें क्या सलाह देते हैं?

२. किसे किसके पास पहले जाना चाहिये?

३. क्या कलीसिया में कोई है जिसके पास जाकर आपको अपनी समस्याएं/ झगड़े मिटाने हैं?

जीवन में उपयोग : आज आपके रिश्तों के बारे में सोचिये । प्रार्थना कीजिये कि आप अपने सब भाई बहनों के साथ एकता से रहेंगे और जैसे यीशु उनके साथ समय बिताते उसी तरह उनके साथ समय बिताइये, जिनके साथ आपका अच्छा रिश्ता नहीं है ।



दिन इकतीस : “निराशा को मिटाना”

नबी एलीयाह ने हाल ही में परमेश्वर द्वारा कुछ महान सफलताओं का अनुभव लिया था । ४५० झूठे नबियों का नाश होना और साढ़े तीन सालों के बाद पहली वर्षा होना उनके सच्चे प्रार्थनाओं का फल था । (याकूब ५:१७-१८ पढ़ें) । लेकिन उसके बाद वे ड़र गए और उदास हो गए ।

१ राजा १९:१-८

१. एलीयाह इतने व्याकुल क्यों थे?
२. वो कौनसी बातें हैं जिसने आपको हिम्मत हारने पर मजबूर किया ?
३. परमेश्वर ने उसे शारीरिक, मानसिक और धार्मिक क्षेत्रों में कैसे प्रोत्साहन दिया?
४. जब भी आप उदास हो जाते हैं तब सामान्यतः आप क्या करते हैं?
५. अगली बार जब आप उदासी के कारण पीछे हटने की सोचें तब इन ३ सबक/सीख को अपनाकर आप आगे कैसे बढ़ेंगे?

१ राजा १९:१९-२२

१. जब एलीयाह को एलीशा जैसा दोस्त और शिष्य मिला तब उनको कैसे महसूस हुआ ?
२. एलीयाह का साहस वापस बढ़ जाने के बाद ही परमेश्वर ने उनके जीवन में एलीशा को डाला ,ऐसा क्यों ?

जीवन में उपयोग : आज आप निराशाओं से कैसे निपट रहे हैं? आपने जो सीखा वह दूसरों के साथ बांटिये ।



दिन बत्तीस : “यीशु के बताए मार्ग पर चलना”

१यूहन्ना २:५-६

१. पिछले दिनों को स्मरण कीजिए । क्या आप यीशु जैसी चाल चल रहे हैं?

मरकुस १:२१-२८

१. यीशु की शिक्षा की खासियत क्या थी?
२. क्या आप दूसरों को अधिकार के साथ सिखाते हैं?

मरकुस १:२९-३४

१. उस रात यीशु कितने देर तक काम कर रहे थे?
२. क्या वे थके हुए थे?
३. उन्होंने इतना परिश्रम क्यों किया?
४. क्या आप कठिन परिस्थितियों में भी चुनौतियों का सामना कर स्वयं को तकलीफ देकर दूसरों तक यीशु का सुसमाचार पहुंचाने की इच्छा रखते हैं ?

मरकुस १:३५

१. गौर कीजिये कि अगले दिन यीशु कितनी जल्दी उठे । क्यों ?
२. यीशु के समान क्या आप प्रार्थना करने के लिये उतावले हैं?

मरकुस २:१३-१७

१. यीशु किन्-किन लोगों के मित्र बने? क्यों?
२. आप पापियों और अविश्वासियों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं?
३. सुसमाचार फैलाने के लिये क्या आप नए मित्र बना रहे हैं?

जीवन में उपयोग : आज के इस अभ्यास से कौनसी दो बातों में आप यीशु की नकल करेंगे? लिखिये और कीजिये ।



दिन तेतीस : “यीशु के समान चमकना”

फिलिप्पियों २:१४-१६

१. आप **जीवन के वचनों** को लोगों के सामने कैसे प्रस्तुत करेंगे?
२. हमारे आस-पास के लोगों के सामने हमें किस प्रकार का उदाहरण दिखाना चाहिये?
३. हाल ही में आपने किन बातों के बारे में शिकायत की या कुड़कुड़ाया? आप कैसे परिवर्तन कर सकते हैं?

१कुरिन्थ ९:१९-२३

१. आप कैसे सब के दास बन सकते हैं? उदाहरण दीजिये ।
२. लोगों को बचाने की मदद करने के लिये आप किन क्षेत्रों में उनके जैसे बन सकते हैं?

भजन संहिता १२६:६

१. शिष्य बनाने जाते समय हमें **रोकर** क्यों जाना चाहिये?
२. जो यह करते हैं उनके लिये कौनसा वादा है?

दानियेल १२:३

क्या आप बुद्धिमान बन रहे हैं?

जीवन में उपयोग : प्रार्थना कीजिये कि जब आप लोगों के साथ अपना विश्वास बांटें तब आपके पास एक ऐसा मन हो जो पूरी गहराई से लोगों से सच्चा प्रेम करे ।



दिन चौतीस : “सुधार को स्वीकारना”

गलातियों २:११-१६

१. पतरस का पाप क्या था?
२. पौलुस ने सब के सामने उनकी गलती क्यों बताई? (१ **तिमुथियुस ५:२०**, **मत्ती १८:१५**) ।

२कुरिन्थियों ७:६-१३

१. पौलुस ने कुरिन्थियों की गलती क्यों बताया और चुनौती क्यों दी?
२. परमेश्वर के अनुसार सुधार के प्रती आपकी प्रतीक्रीया कैसी होनी चाहिये?

३. हाल ही में क्या किसीने आपको आपकी गलती बताई?
४. आपका जवाब क्या था?
५. क्या वे आपके जवाब से प्रोत्साहित हुए?

गलातियों ६:१-५

१. किस बाध्यता के कारण हमें एक दूसरे की मदद करनी चाहिये?
२. घमण्ड आपको सुधार का स्वीकार करने से कैसे रोक सकता है?
३. अपनी तुलना दूसरों से करना खतरे की बात क्यों है?

नीतिवचन १५:३१-३२/१६:१८

१. किस शास्त्र में आपका वर्णन है?

जीवन में उपयोग : आपके मार्गदर्शन से सलाह कीजिये कि आप सुधार को कैसे स्वीकारें। क्या आपको इस क्षेत्र में परिवर्तन करना है?



दिन पैंतीस : "उस नाम के योग्य"

१पतरस ४:१२-१९

१. यीशु के लिये आपने कौनसे अपमान और दुख सहे?
२. आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये?
३. सताव के समय शैतान क्या चाहता है, कि आप क्या सोचें और क्या करें?

इब्रानियों १०:३२-३४

१. क्या आपने इस प्रकार की परेशानियों का सामना किया है?
२. जो मसीही नीन्दा और दबाव से गुजर रहे हैं उनको प्रोत्साहन देने के लिये आप क्या कर रहे हैं?

इब्रानियों ११:३२-४०

१. क्या आपने यीशु के लिये, शेर, आग, तलवारों, सैनीकों, यातनाओं, चाबुक की मार, कैद, जंजीरों या फिर देश-निकाला इन चीजों का सामना किया है? परमेश्वर इन लोगों के बारे में क्या सोचते हैं ?

२कुरिन्थियों ११:२३-२९ रोमियों ८:१८

१. मसीह के लिये पौलुस ने किस प्रकार का जीवन जीया?
२. अपने दुःख सहन के बारे में उसे कैसा महसूस हुआ?
३. एक मसीह होने के नाते आप आनन्दित हो या कुड़कुड़ा रहे हो?

जीवनमें उपयोग : क्या यीशु यह कहेंगे कि आप एक मसीह कहलाने के योग्य हो?



दिन छत्तीस : "एक आशा और एक भविष्य"

१. क्या आपको अपने भविष्य की चिन्ता है?
२. आपकी आशाएं और आपके डर क्या हैं?

यिर्मयाह २९:११-१३

१. जो लोग परमेश्वर को सम्पूर्ण मन से ढूँढते हैं परमेश्वर उनसे क्या वादा करते हैं? आप परमेश्वर की खोज कर रहे हैं या किसी और चीज की?

भजनसंहिता ३७:३-४

१. आपके दिल की इच्छाएं क्या हैं? क्या आप यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपकी इच्छाओं को पूरा करेंगे?

भजनसंहिता १६:५-८

१. क्या आप अपने जीवन के बारे में ऐसा महसूस करते हैं? क्यों?

१तिमुथियुस ६:६-१०

१. किस चीज से आपको संन्तुष्ट होना चाहिये ?
२. पैसों और दूसरी चीजों की इच्छा आपके जीवन को क्या बना देगी?
३. कोई व्यक्ति कैसे विश्वास से गुमराह हो जाता है?
४. और कौनसी इच्छाएं हमें गुमराह करती हैं?

रोमियों ८:३१-३२

१. परमेश्वर ने आपके प्रती अपने प्रेम का सबूत कैसे दिया है?

जीवन में उपयोग: यदि आपके जीवन में परेशानी या असन्तुष्टता है तो कबूल करें कि यह विश्वास की कमी के कारण है, और इनमें से एक वचन याद कर लो ताकि यह आपको 'परमेश्वर विश्वासयोग्य है' यह याद दिलाता रहे।



दिन सैंतीस : " देने का अनुग्रह "

लूका २१:१-४

१. इस विधवा के उदाहरण से आप क्या सीखते हैं ?
२. तीन कारणों के बारे में सोचो जिनसे उसे **कन्जूस** कहा जा सकता हो।

१तिमुथियुस ६:१७-१९

१. यदि आपके पास पैसा हो तो आपको जीवन कैसे जीना चाहिये?

२कुरिन्थियों ९:६-१५

१. क्या आपने उदारता से परमेश्वर को देने का निर्णय बनाया है?
२. क्या आप हर बार वही रकम दे रहे हैं?
३. जो उदारता से देते हैं परमेश्वर उनसे क्या वादा करते हैं?
४. आपके देने से लोगों को, परमेश्वर को और आप को क्या लाभ होता है?

जीवन में उपयोग : यदि आप यह सोचते हैं कि आपका अब तक का दान उदारता या विश्वासयोग्य नहीं था, तो आप निर्णय कीजिये की आप कितना देंगे और परमेश्वर के आगे अपने इस वादे को पूरा करें।



दिन अड़तीस : "जाओ और शिष्य बनाओ"

२ तीमुथियुस २:१-७

वचन २ की तुलना मती २८:१९-२० से करो।

१. यीशु का दुनिया भर में प्रचार करने का तरीका क्या है?
२. एक विश्वासयोग्य शिष्य कैसा होता है? क्या आप दूसरों से समय पर मिलने, समय के पाबन्द और नीर्दोषों का सही रूप से पालन करने में विश्वासयोग्य हैं?

३. एक सैनिक, एक खिलाड़ी और एक किसान के उदाहरण पर चलने में आप कैसे हैं? स्पष्टता से बताओ।

४. क्या तिमुथियुस और पौलुस लोगों को पढ़ाने के लिये आपको चुनते ? क्यों ?

१कुरिन्थियों ९:२४-२७

१. मसीह जीवन किस तरह एक दौड़ में दौड़ने के समान है?

२. अगर एक खिलाड़ी कसरत नहीं करे या वह अपने शरीर को पीड़ा न दे तो क्या होता है?

३. एक शीष्य होने के नाते यदि आप अपने को प्रशिक्षण और अनुशासन में न रखें तो क्या हो सकता है?

जीवन में उपयोग: एक सूची बनाओ कि आप अपने प्रार्थना, पवित्रशास्त्र अध्ययन, प्रचार करने और वक्त का सही उपयोग करने में अपने आपको कैसे अनुशासित रख सकते हैं। अपने मार्गदर्शक से बात करें।



दिन उनतालीस : "विश्वास ही विजय है"

मरकुस २:१-१२

१. यह मनुष्य यीशु को देखने पर क्यों तुला हुआ था?

२. यीशु को न देखने के लिये इस मनुष्य के पास क्या कारण थे? तीन कारण दीजिये।

३. इस व्यक्ति के किस बात से यीशु प्रभावित हुए ?

४. आप इस व्यक्ति जैसे कैसे बन सकते हैं?

मरकुस ५:२१-४३

१. याईर और उस लहू बहनेवाली रोगी स्त्री में क्या समानताएँ थी?

२. यीशु ने दोनों की मदद क्यों की?

३. जब हमें मदद की जरूरत पड़ती है तो हमारा सम्पूर्ण रीति से सिर्फ यीशु पर भरोसा रखना क्यों महत्वपूर्ण है?

४. किन क्षेत्रों में आपने परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा नहीं किया ?

५. क्या आप मदद के लिये किसी और के पास गए?

मरकुस ६:१-६

१. इस जगह में क्या चीज थी जो अलग थी? क्यों?

२. क्या यीशु आपके विश्वास पर या विश्वास की कमी पर आश्चर्य चकित हैं? क्यों?

इब्रानियों ११:५-६

१. परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये विश्वास क्यों महत्वपूर्ण है?

जीवन में उपयोग : आपके (या किसी और के) जीवन में कौनसे क्षेत्र में आपको परमेश्वर के मदद की जरूरत है। सब बातों की सूची बनाकर लगातार प्रार्थना कीजिये।



दिन चालीस : "अच्छे दिल, अच्छे कर्म, अच्छी चीजें"

लूका ८:१५

१. क्या आपका दिल ऐसा है? २. आपके जीवन से क्या उत्पन्न हो रहा है?

फिलेमोन ४-७

१. फिलेमोन ने कौनसी ऐसी तीन बातों की जिससे हम यह जान पाते हैं कि उसका दिल अच्छा था?

२पतरस १:५-११

१. मसीही जीवन में बढ़ते रहने के लिये आपको क्या करना चाहिये ?

२. सद्गुण, धीरज, भाईचारे का स्नेह का वर्णन कीजिये।

३. यदि आपकी प्रगती रुक जाए तो क्या होगा?

४. वचन १० का अर्थ क्या है?

३यूहन्ना २-६

१. यदि एक भाई या बहन आपसे मिलने आएंगे तो वे आपके जीवन के बारे में क्या बातें कहेंगे ?

२. आपका आज तक का मसीही जीवन आपको कैसे लगता है?
३. क्या आप प्रगती कर रहे हैं?
४. किन क्षेत्रों में आपको मदत की जरूरत है?

जीवन में उपयोग : अब जब कि आपने ४० दिन का अपना अभ्यास पूरा कर लिया है, अब आप आगे किस चीज का अध्ययन करेंगे यह तय कर एक योजना बनाओ। जिनको आप मसीही बनने में मदत कर रहे हैं उनके साथ यह अभ्यास बांटिये। प्रगति करते रहिये।

